पूर्वोत्तर प्रभा

(सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक शोध पत्रिका)

Journal Home Page: **http://supp.cus.ac.in/**

संपादकीय

पिछले कुछ वर्षों में प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तेजी से प्रगति देखी गई है, जिसने हमारे जीने और अपने आस-पास की दुनिया को समझने के तरीके को प्रभावित किया है। प्रौद्योगिकी के आगमन और इसके विकास से लाभ हुआ है कि इसने हमारे सीखने और समझने की पद्धतियों को भी विस्तार दिया है। भाषा प्रौद्योगिकी का क्षेत्र अत्यंत व्यापक और बहु-विषयक है। भारत सरकार ने हिंदी में विज्ञान तथा तकनीकी साहित्य और शब्दावलियां उपलब्ध कराने के निमित्त वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना की है। इसका कार्य ज्ञान-विज्ञान तथा तकनीकी क्षेत्रों में प्रयोग में आने वाले शब्दों का हिंदी पर्याय एवं शब्दकोशों का निर्माण करना है। यह आयोग ज्ञान-विज्ञान की लगभग सभी शाखाओं से संबंधित शब्दावलियों का निर्माण कार्य कर चुका है। यह आयोग हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के विकास और समन्वय से संबंधित सिद्धांतों का कार्यान्वयन बहुत ही सक्रियता के साथ करता रहा है।

आयोग द्वारा जो महत्वपूर्ण कार्य हो रहे हैं, उन्हें निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर देखा जा सकता है- अंग्रेजी/हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के संबंध में द्विभाषी और त्रिभाषी शब्दावलियां तैयार करना तथा उनका प्रकाशन करना, इसकी मूल परिकल्पना रही है। इस बीच आयोग द्वारा भारतीय भाषाओं में प्रयोजनमूलक शब्दावली तैयार करके उसको प्रकाशित करने का कार्य प्रमुखता से किया गया है। इसके अतिरिक्त स्कूली स्तर की शब्दावली, पारिभाषिक शब्दकोशों और विश्वकोशों का निर्माण एवं विश्वविद्यालय स्तर की पाठ्य-पुस्तकों, मोनोग्राफों और पत्रिकाओं को तैयार करवाना, इसका प्रमुख लक्ष्य रहा है। ग्रंथ अकादमियों, पाठ्य-पुस्तक बोर्डों और विश्वविद्यालय प्रकोष्ठों को क्षेत्रीय भाषाओं में विश्वविद्यालय स्तरीय पुस्तकों के लिए सहायता अनुदान प्रदान करना, इसकी सराहनीय पहलों में से एक है।

एक प्रकार से देखें तो भाषा प्रौद्योगिकी एक तकनीकी आविष्कार है, जिसने साबित कर दिया है कि मशीनें मानव-भाषाओं की व्याख्या करने तक ही सीमित नहीं हैं। भाषा प्रौद्योगिकी ने मशीन लर्निंग, भाषा

विज्ञान और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे अन्य क्षेत्रों का विकास और समर्थन किया है और इसके अनुप्रयोग व्यापक हैं।

उक्त सभी संदर्भों को दृष्टिगत रखते हुए पूर्वोत्तर प्रभा के इस अंक में सी. जय शंकर बाबु द्वारा 'नव माध्यम के सैद्धांतिक अभिलक्षण' विषयक लेख प्रमुखता से प्रकाशित किया जा रहा है। पूर्वोत्तर प्रभा पत्रिका अपने तीसरे वर्ष में प्रवेश कर रही है। हमारी निरंतर कोशिश रही है कि हम इसमें शामिल लेखों को विषय-विविधता के साथ समायोजित कर सकें, इस दिशा में हमें काफी हद तक सफलता भी मिली है। संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली द्वारा मंचित विभिन्न नाट्य-महोत्सवों में हबीब तनवीर के नाटकों को रंगमंच की नई शैली के साथ प्रस्तुत किया गया। इन नाटकों ने रंगमंच की पारंपरिक शैली को तोड़ने का कार्य किया। इस संदर्भ को ध्यान में रखते हुए इस अंक में शामिल तेजस्वरूप त्रिवेदी का लेख 'अपने समय का विलक्षण रंगशिल्पी : हबीब तनवीर' कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। इस दृष्टि से तेजस्वरूप द्विवेदी का लेख अत्यंत पठनीय एवं ज्ञानवर्धक है। इसी क्रम में भारतीय संस्कृति और हिन्दी विषय पर केन्द्रित दो शोध पत्रों को इस अंक में प्रमुखता से प्रकाशित किया जा रहा है, जिसमें वेदप्रकाश गौड़ और अर्चना त्रिपाठी की उपस्थिति उल्लेखनीय है। कल्पना पत्रिका पर केन्द्रित गोरखनाथ तिवारी का लेख अत्यंत रोचक एवं संग्रहणीय है।

इसके अलावा इस अंक में शामिल रहीम मियां का लेख 'प्रेमचंद के साहित्य में सांप्रदायिक भावना' में लेखक ने नवीन दृष्टियों से प्रेमचंद को नए संदर्भों के साथ देखने की कोशिश की है। 'स्वाधीनता संग्राम और आधुनिक हिंदी कविता' विषयक मुकेश कुमार का लेख समय सापेक्ष प्रासंगिक और समीचीन है।

सिक्किम विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के शोध जर्नल का उद्देश्य विभागीय विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों की रचनात्मकता एवं उनके भीतर शोध और तकनीकी विज्ञान की अद्यतन समझ को विकसित करना रहा है। आगामी अंकों में हम विभागीय विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के शोध-पत्रों को भी प्रमुखता से प्रकाशित करने का प्रयास करेंगे।

पूर्वोत्तर प्रभा का नवीनतम अंक अब पाठकों के समक्ष अवलोकनार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है।

(प्रो. प्रदीप के शर्मा)